प्रश्न - इस्लाम मजहब का परिचय देते हुये इसकी विशेषताओं को बतलाइए।

उत्तर - इस्लाम पंथ या मजहब का उदय अरब देश में हुआ था। इस्लाम मजहब के पैगम्बर हजरत मोहम्मद साहब का जन्म 570 ई मक्का शहर में हुआ था। हजरत मोहम्मद पैगम्बर साहब को इस्लाम पंथ का संस्थापक माना जाता है। लेकिन इस्लाम की मान्यता के अनुसार पैगम्बर मोहम्मद के पूर्व 1,24000 नबी (दूत) संसार में आ चुके थे। इसी कड़ी में हजरत मोहम्मद पैगम्बर को अंतिम नबी माना जाता है।

जब हजरत मोहम्मद पैगम्बर का धरती पर आगमन हुआ तब अरब अत्यन्त प्रतिकूल और पिछड़ी हुई अवस्था में था। वहां के लोग कबिलों में बंटे हुये थे और चारों तरफ रेत ही रेत थी। आहार के लिए अत्यन्त संघर्ष करना पड़ता था। कबिलों की आपस में हिंसक लड़ाईया होती थी।

ऐसी कठिन और प्रतिकूल स्थितियों में एक सामाजिक राजनैतिक धार्मिक संगठन को स्थापित करना एक अविश्वसनीय कार्य था जिसे हजरत मोहम्मद पैगम्बर साहब ने एक आकार दिया। उन्होंने इन सभी कबिलों को धार्मिक आधार पर एक सामाजिक रूप दिया और उन्हे

एक कर दिया।

इस्लामिक जीवनशैली का मूल आधार दो इस्लामिक ग्रन्थ है जिन्हें कुरान शरीफ़ तथा हदीस कहा जाता है।

इस्लाम में कुरान को आसमानी किताब कहा जाता है जिसे अल्लाह ने अपने फरिश्ते जिब्राईल द्वारा अपने संदेशो को पैगम्बर मोहम्मद पर नाजिल, अवतरित किया। संपूर्ण कुरान 30 खण्डो में विभाजित की गई है इनमें 114 अध्याय है। कुरान में आध्यात्मिक जीवनशैली के साथ इस्लामिक रहन सहन, जिसे शरियत कहा जाता है तथा तात्कालीन परिस्थितियों पर आधारित निर्देश प्राप्त होते है।

कुरान के अलावा इस्लाम में दूसरी महत्वपूर्ण किताब हदीस है। हदीस में उन सभी रवायतों, निर्देशों का उल्लेख किया गया है जो अलग अलग स्थितियों में हजरत मोहम्मद पैगम्बर के जीवनशैली पर केन्द्रित है। हजरत मोहम्मद पैगम्बर के जीवन और उनके द्वारा अनेक नैतिक, सामाजिक आदि समस्याओं को सुलझाते हुये, उनके अनुयायियों ने देखा या उन्ही का वर्णन हमें हदीस में प्राप्त होता है। प्रत्येक इस्लाम का अनुयायी हदीस को कुरान की तरह प्रामाणिक ग्रन्थ मानता है।

इस्लाम मजहब में अनुयायियों को इस्लामिक जीवनशैली के कठोरतापूर्वक पालन का निर्देश दिया जाता है।

मुसलमान शब्द का अर्थ है नियमों का पालन करना। इस्लाम का अर्थ खुदा को समर्पण, ईमान का अर्थ एक अल्लाह में विश्वास है तथा दीन से आशय है इस्लामिक ~~की~~ मान्यताओं पर आधारित जीवन जीना।

हजरत मोहम्मद साहब का इस्लामिक प्रचार, मक्का में अनेक लोगो को रास नहीं आया और विरोध स्वरूप उन्हे अपने अनुयायियों के साथ मदीना प्रस्थान करना पड़ा जिसे हिजरा माना जाता है तथा यही हिजरा इस्लामिक केलेन्डर का प्रारंभ है। धीरे धीरे इस्लाम अरब से निकल कर पूरी दुनिया में फैल गया। आज विश्व में इस्लाम सबसे ज्यादा अनुयायियों द्वारा माना जाने वाला, दूसरा बड़ा धर्म या मजहब है। मक्का और मदीना को इस्लाम के पवित्र शहर माना जाता है तथा रमजान के महिने को पवित्र माना जाता है तथा मिलाद-उन नबी, शब ए बारात, ईद उल फित्र, ईद उल अजहा आदि प्रमुख इस्लामिक त्यौहार है।

इस्लाम मजहब को निम्नलिखित विशेषताओं से भी स्पष्ट किया जा सकता है। —

1- इस्लाम एकेश्वरवादी मजहब है।

2- इस्लाम में पांच नियमों के पालन की अनिवार्यता है।

3 - इस्लाम में खुदा और जीव का संबंध भिन्न भिन्न तथा कठोर है।

4 - इस्लाम ऊंच नीच भेदभाव जातिप्रथा का निषेध करता है तथा संगठन और एकता को महत्वपूर्ण मानता है।

5 - इस्लाम में औरतो को ~~पुरुषों से~~ अधिक अधिकार दिए गए हैं।

6 - इस्लाम पुनर्जन्म को नही मानता और कयामत में विश्वास रखता है।

उपर्युक्त विशेषताओं की व्याख्या इस प्रकार है।

1. इस्लाम एकेश्वरवादी मजहब है - अरब में मक्का में 360 मुर्तिया थी इन्ही मूर्तियों की देवताओं के रूप में पूजा की जाती थी। पैगम्बर साहब के साथ जब इस्लाम का उद्भव होता है तो कुरान में यह दर्ज होता है कि 'अल्लाह तो केवल अकेला पूज्य है। अल्लाह का फरमान है दो दो पूज्य प्रभु न बनाओ, वह तो बस अकेला पूज्य प्रभु है। वह एक अल्लाह ही है - खुदा की गरज उसका गुणगान करती है और उसके भय से कांपते हुये फरिश्ते भी। अल्लाह आकाशो और धरती का प्रकाश है।

इस प्रकार इस्लाम केवल एक अल्लाह को ही स्वीकार करता है तथा उसके समतुल्य किसी को नहीं मानता है।

2- इस्लाम में पांच नियमों के पालन की अनिवार्यता है -

इस्लामिक आचार संहिता के अनुसार इस्लाम के अनुयायी प्रत्येक मुसलमान को निम्नलिखित 5 नियमों का पालन करना अनिवार्य है।

A - शहादा या गवाही देना - एक मुसलमान को अपने इस विश्वास की गवाही देना होता है कि एक अल्लाह के सिवाय कोई सर्वोच्च शक्ति नहीं है तथा मोहम्मद साहब अल्लाह के रसूल है।

B. नमाज - यह प्रार्थना है जो अल्लाह के प्रति अनुयायी का झुकाना है। नमाज दिन में 5 बार अदा की जाती है। यह मक्का की दिशा में मुंह करके की जाती है। यह अनिवार्य प्रार्थना है इससे बचा नहीं जा सकता।

C - रोजा - इस पवित्र महिने में सुर्योदय से सूर्यास्त तक रोजा रखना होता है। इस पूरी अवधि में अल्लाह का स्मरण और इबादत करना अनिवार्य होता है।

D. जकात - इस्लाम के अनुसार पूंजी अल्लाह की देन है अतः उसके कुछ हिस्से का जरूरतमंद को दान देना अनिवार्य है जिसे

RAJNANDGAON

जकात कहा गया है।

(5) हज - यह तीर्थयात्रा की तरह है जो मक्का जाकर की जाती है यदि कोई विवशता ना हो तो हर मुसलमान को एक बार मक्का जाकर हज यात्रा करनी चाहिए।

ये ही इस्लाम के पाँच प्रमुख स्तम्भ है।

(3) इस्लाम में खुदा और जीव का संबंध भिन्न भिन्न तथा कठोर है - इस्लाम दर्शन के अनुसार इस सारी कायनात का निर्माता और पालन कर्ता खुदा है जाहिर है कि जीव का सृजन भी खुदा द्वारा किया गया है तथा खुदा और जीव दो भिन्न सत्ताएं है। खुदा जीव के गले की नस से भी निकट है तथा जीव को खुदाई निर्देशों का पालन कठोरता पूर्वक करना चाहिए जो इन नियमों की अवहेलना करता है उसके लिए खुदा ने कठोर से कठोर सजा का निर्धारण किया है। इस प्रकार यदि खुदा दयालु है तो दूसरी तरफ हिसाब लेने वाला, कठोर दंड देने वाला भी है।

4. इस्लाम ऊँच नीच, भेदभाव जातिप्रथा का निषेध करता है तथा संगठन और एकता को महत्वपूर्ण मानता है -

GOVT. Bhaskar AY CO
RAJNANDGAON

6 इस्लाम दर्शन की सबसे बड़ी विशेषता और ताकत यह है कि यह सभी मनुष्यों को समान मानता है कोई बड़ी जाति या छोटी जाति वाला नहीं है कोई ऊंचा नीचा नहीं है। इस्लाम भेदभाव नहीं करता और यही कारण है कि पूरे विश्व के लोग इस्लाम की तरफ आकर्षित हुये और धीरे धीरे यह अरब से निकलकर पूरे विश्व में फैल गया। इसी कारण मुसलमानों का आपसी सामाजिक संगठन बना तथा धीरे धीरे यह एकता दृढ़ हो गई जो इस्लाम की ताकत है।

5. इस्लाम में औरतों को ~~पुरुषों से~~ अधिक अधिकार दिए गए हैं — इस्लाम की सबसे अच्छी विशेषता यह है कि इस्लामिक नियमों के अन्तर्गत औरतों को महत्वपूर्ण अधिकार दिए गए हैं महिलाओं को विरासत में संपत्ति का अधिकार प्राप्त है तथा पुरुषों की तरह ही महिलाओं को भी ज्ञान प्राप्त करना धार्मिक कर्तव्य माना गया है। इसके अलावा महिलाओं को विवाह में वर चुनने और तलाक लेने का भी अधिकार है। इस प्रकार इस्लाम औरतों के अधिकार के संदर्भ में एक प्रगतिशील मजहब माना जा सकता है।

6 — इस्लाम पुनर्जन्म को नहीं मानता तथा कयामत में विश्वास रखता है — इस्लाम में एक बार मृत्यु हो

जाने के बाद फिर जन्म नहीं होता तथा माना जाता है कि अल्लाह एक दिन संसार समाप्त करेगा वह दिन कयामत का दिन होगा। उसी दिन हर इंसान के अच्छे बुरे कर्मों का फल दिया जाएगा। इस प्रकार इस्लाम पुनर्जन्म में नहीं कयामत में विश्वास रखता है।

यही इस्लाम मजहब की विशेषताएं हैं इनकी विवेचना से यह स्पष्ट होता है कि जिस प्रकार प्रत्येक धर्म या मजहब में स्वार्थी और फायदा उठाने वाले लोग उस धर्म और मजहब की मान्यताओं की व्याख्या को अपने हिसाब से तोड़-मरोड़ करते हैं इसी प्रकार इस्लाम मजहब की सार्वभौमिक विशेषताओं को परिवर्तित कर उसके संकुचित और कट्टर रुप को प्रस्तुत किया जाता है, जबकि उसकी मान्यताएं उसे एक क्रान्तिकारी मजहब और गहरी आध्यात्मिकता वाला ~~धर्म~~ मजहब सिद्ध करती है। यही इस्लाम मजहब की संक्षिप्त व्याख्या है।